K-94
97 ~~95~~ Revised
96

KS 89

होए इकत्र मिलो मेरे भाई

(सत्संदेश दिसम्बर 1965 में प्रकाशित प्रवचन)

एक बार मैडम ब्लावटस्की, थ्योसोफिकल सोसाईटी की वह हैड थी, लाहौर गई। वहां बहुत सारे प्रोफैसर बैठे थे, एक कमरे में वह भी बैठी थी। उसने बातें कुछ ऐसी कहीं जो आम फेहम (समझ) नहीं थीं, तो एक प्रोफैसर ने कहा, Madam, What all you speak is a mere rigmarole and as impossible as flowers can rain down from the roof.

कि ऐ मैडम, जो कुछ तू कह रही है यह महज़ (केवल) एक अफ़साना (कहानी) है। यह ऐसे ही नामुमकिन है जैसे छत्त से फूलों की बारिश का होना नामुमकिन है जो तू कह रही है बातें। तो मैडम ब्लावटस्की ने कहा, Professor do you think it is impossible ? कि ऐ प्रोफैसर, क्या तुम समझते हो यह नामुमकिन है ? और इतने में बारिश वाक़ई छत्त से हुई, फूलों से मेज भर गई और प्रोफैसर हैरान था। वह कहने लगी, This is also according to the laws of nature which are hidden as yet, कि यह भी कुदरत के क़ानून मुताबिक हैं बातें मगर वह कानूने कुदरत अभी तक हमें मालूम नहीं। तो मेरे अर्ज़ करने का मतलब है कि नींद को जितना चाहे कम कर लो, खाने को जितना मर्ज़ी चाहे कम कर लो, एक चावल पर ले आओ। नींद तो एक मिनट से ज्यादा होती ही नहीं। हज़रत मुहम्मद साहिब से पूछा गया कि महाराज आप सोते हैं कि नहीं। तो कहने लगे, नहीं, मैं नहीं सोता, मेरी रूह जागती है पर तन आराम में होता है। तो नींद के बारे में वहीं मैंने अर्ज़ किया कि पावर को जितना डिवैल्प कर लो, चेतनता बढ़ेगी। इतना conciousness में यह है कि

concentration (एकाग्रता) रहती है, जिस्म को आराम मिल जाता है तो recharging हो जाती है। तो नींद कम हो सकती है।

मैंने आप अपनी आंखों से देखा। 1912 की बात है। एक मुसलमान फकीर था। अब्दुलहाब उस का नाम था। वह अपने कमरे में किसी को नहीं रहने देता था पर मुझे इजाज़त थी। रात को बस ऐसे पड़ा रहता था ज़मीन के ऊपर। आप ने ध्रुव भक्त और प्रहलाद के किस्से सुने होंगे। वे ज़मीन से ऊपर उठ जाते थे। यह according to laws of nature, (कानूने-कुदरत के मुताबिक) है। अगर दो positive साईडें मिलें तो अलैहदा हो जायेंगे, ऊपर हो जायेंगे। तो मतलब यह है कि ये चीज़ें हमें पता नहीं हैं, कानूने-कुदरत के मुताबिक। लोग उन को करामात समझते हैं, यह miracle (जादू) नहीं। तो ऐसे वाकेयात महापुरुषों के जीवन में आते रहते हैं और हम भी उस के मुताबिक करें, हम भी उस को पा सकते हैं। तो इस लिये मैंने अर्ज़ किया है, Every saint has his past and every sinner his future. आज जो संत बन चुका है वह कभी हमारी तरह ही था। जो एम०ए० बन गया वो पहले कभी पहली जमात में पढ़ा करता था और जो पहली में पढ़ता है वह भी अगर right way (सही रास्ते) में चल पड़े तो उसी गति को पा सकता है। मौजूदा हालात में महापुरुष जब भी आये यह कशमकश हमेशा चली आई है, आज कोई नई नहीं। तो उन के लिए वाहिद इलाज, जो अभी शास्त्री जी ने फरमाया था, सारे महापुरुष, लामा हो, कोई भी हो, देख रहे हैं भविष्य के हालात और वाकई भविष्य ऐसा आ रहा है। पहले प्रभु कृपा से कहो, यह ऋषियों मुनियों की धरती है। हमेशा से इस की संभाल होती रही, आगे भी होगी, कष्ट ज़रूर होगा। तो आने वाले दिनों का वही वाहिद इलाज है कि हम एक दूसरे से प्यार रखें। समाजें हमारे स्कूल और कालेज हैं। मुबारिक है जिस समाज में तुम हो, उस में रहो। हर एक समाज में महापुरुष आये और सब ने यही तालीम दी कि मिल बैठो, एक दूसरे को समझने की कोशिश करो।

तो गुरु अर्जुन साहिब ने उस ज़माने में आप को पता ही है। उन्होंने एक ऐसा

रूहानियत का ज्याफतखाना कहो, Banquet hall of spirituality कायम किया जिस में जो महापुरुष थे, जिन की वाणी उन को मिल सकी सब एकत्रित कर के एक जगह इकट्ठी कर दी। उस का नाम है, पहले तो नाम था श्री आदि ग्रंथ और अब उस को गुरु ग्रंथ साहिब कहते हैं। तो आदि ग्रंथ में सब महापुरुषों की बाणियां रखने का मतलब है कि हर एक समाज में महापुरुष आये हैं। उन्होंने क्या तालीम दी? कि मानस जाति सब एक है। परमात्मा ने इंसान बनाये, इन्सान इन्सान में कोई फर्क नहीं। सब को एक जैसे हकूक (अधिकार) दिये। इन्सानों ने आगे समाजें कायम कीं। जब जब महापुरुष आये, उस मिशन को कायम रखने के लिए कोई न कोई संयम बनाना पड़ा। जब तक आमिल लोग रहे वह सुख का कारण बनते रहे। जब आमिल लोग न रहे दुख का कारण बन गये। असल मतलब किसी समाज में दाखिल हों। सब प्रभु के बंदे बन जायें। तो सब उसी के बंदे बनने के लिए उन स्कूलों (समाजों) में दाखिल हुए थे। जब आमिल लोग रहे सहीनज़री रही कि मनुष्य जाति सब एक है, सब को एक जैसे हकूक परमात्मा ने दिये हैं। पैदा भी एक तरह होते हैं, बाहर की बनावट भी एक तरह, अंदर की बनावट भी एक तरह। तो पहले इन्सान है बाद में समाजें बनीं। फिर आत्मा देहधारी है। आत्मा की ज़ात वही है जो परमात्मा की ज़ात है और सब का जीवनधार वही है। हम सब उसी के पुजारी हैं। यह right understanding (सहीनज़री) जब तक बनी रहेगी इस से, सहीनज़री से, right undersanding से right thoughts बनते रहे, शुभ विचार, शुभ वचन, शुभ कर्म। दुनिया में सुख हो गया। जब जब हम भूलते रहे। गुरु अर्जुन साहिब आये। उस वक्त भी हिंदुस्तान का बहुत सारा झगड़ा था। गुरु नानक साहिब, कबीर साहिब जब आये तब भी तो यही चीज़ें थीं। आज भी उस की ज़रूरत है। आगे मज़ाहिब की आपस में न समझी थी। अब एक ही समाज की कई समाजें बन चुकी हैं।

देखे का मत एक

जिन्होंने देखा उन सब ने बात वही कही, ज़बांदानी अपनी रही, तर्जेब्यान अपना

रहा, मज़मून वही था। तो इस वक्त गुरु अर्जुन साहिब का एक शब्द आ रहा है उसी मज़मून के बारे में कि हम ने क्या करना है। गौर से सुनिये क्या फरमाते हैं ।:

होए एकत्र मिलो मेरे भाई॥
दुविधा दूर करो लिव लाई॥

वह सब को भाई समझते हैं। हम सब उस प्रभु के बच्चे हैं। भाई और बहन हैं। कहते हैं ऐ भाई, हमारी दोरुखी बन चुकी है, दुविधा के कारण सब दुख का कारण हो रहा है। अब दोचित्ती जब तक हटे नहीं, दोरुखी हटे नहीं, एक रुखी बने नहीं, सुख कैसे हो सकता है ? एक का ख्याल इधर, एक का ख्याल उधर, कशमश होगी। इस लिये कहते हैं, पहले दोरुखी, दुविधा दूर होनी चाहिए। कैसे दूर होगी। हर एक अपने अपने ख्याल में, ज़ोम में बैठा है कि मेरा जो ख्याल है यही ठीक है, बाकी सब गलत हैं। तो कहते हैं इसका इलाज क्या है ? कि परमात्मा ने इन्सान बनाये और हर एक समाज में महापुरुष आये। तारीख (इतिहास) यह बतलाती है क्योंकि परमात्मा ने तो इन्सान बनाये, इंसान ने समाजें बनाईं। तो समाजें जब बनीं उन की तालीम या मिशन को जारी करने और कायम रखने के लिये बनीं। इन्सान इंसान के काम आने के लिए बनीं। तो सब महापुरुषों ने यही जागृति दी, awaken क्या है ? तो कहते हैं गुर अर्जुन साहिब कि पहली बात यह है कि आपस में मिल बैठना सीखो। होए एकत्र मिलो मेरे भाई। ऐ भाइयो, तुम आपस में मिल कर बैठो:-

मिलवे की महिमा बरन न साकूं नानक परे परीला।

कि मिल के बैठने की महिमा बयान नहीं की जा सकती। कहते हैं परे से परे है। अब मिल बैठने में क्या होगा ? दिल दिल को राह बनेगा न। हम एक दूसरे को समझ सकेंगे, बात क्या है ? मैं आप को कहूं, मैं गया था इटली, रोम शहर में, वहां पर जो बिशप इंचार्ज था, दूसरे मज़हबों का, उस से talk (बात) हुई, heart to heart talk ऊपर से कोई नहीं। जब heart to heart talk हुई, कहने लगा वाकई यह हम ने

गलत तालीम दी है। यह लफ़्ज़ थे। मैंने कहा तो जब यह समझते हो तो फिर bring round क्यों नहीं करते लोगों को ? कहने लगा अगर हम करेंगे तो आधे बिशप डिमोट कर दिये जायेंगे। बात समझे? एक दिल दिल से जो बात समझ में आ सकती है, वैसे नहीं आ सकती। दो बोडीज़ चार्जड हों ऐसे रखोगे टिक टिक बीच में शरारे उठेंगे अगर मिल बैठेंगे तो? नहीं तो पहली बात मिल कर बैठो। किन को? भाइयों को, भाइयों ने अलग अलग लेबल लगा रखे हैं। अलग अलग स्कूलों और कालेजों के बैजेज़ (बिल्ले) लगा रखे हैं। हैं तो भाई, कि नहीं इन्सान के लिहाज़ से। We are all brothers and sisters in God. एक ऐसा रिश्ता है जो कुदरत ने बनाया, वह कभी टूट नहीं सकता। इस रिश्ते को हम जाते हैं भूल। कारण? जब formation, समाजें बनती हैं, मैंने अभी अर्ज़ किया था, जब तक आमिल लोग रहे, सहीनज़री रही, सुख का कारण बनता रहा। जब आमिल लोगों की कमी हो गई। The same good old custom corrupts itself. Formations (समाजें) बनीं, formations से stagnatoin (गिरावट) फर्सूद बनी, समाज के पुजारियों से कशमकश चलने लगी deterioration हो गई। फिर ऐसे वक्त में कोई महात्मा आ कर उसे ताज़ा कर गया उस बुनियादी तालीम को, सहीनज़री को। वही इलाज एक ही है जो लामा ने कहा, श्री धर्म देव शास्त्री ने अपनी तकरीर में जो कि 9 अक्तूबर के पर्चे में छप चुकी है। वही गुरु अर्जुन साहिब ने कहा, वही गुरु नानक साहिब और कबीर साहिब ने कहा, और महापुरुषों ने कहा, मानव जाति सब एक है, यह उपदेश दिया, एक ही है और सब उस की कायनात है:-

एह जग सच्चे की है कोठरी सच्चे का विच्च वास॥

इस सबक को हम भूलते रहे, महापुरुष फिर ताज़ा करते रहे, फिर उन के चले जाने के बाद फिर और गलती बन गई। फिर कोई और महापुरुष आ कर उस को ताज़ा कर गया। तो गुरु अर्जुन साहिब जब आये तो उन्होंने बड़ा भारी काम जो किया वह यही किया कि सब महापुरुषों की वाणी एक जगह इकट्ठी कर दी। प्रभु को

जिन्होंने पाया, उन्होंने एक ही सही नज़री पेश की और –

देखे का मत एक है॥

वह कहते हैं कि भई सारी यह दुविधा दूर करने का कोई इलाज? कहते हैं, मिल कर बैठो। मिल कर कैसे बैठ सकते हो? हर एक के रूप और रंग अलैहदा हैं, रस्मो रिवाज अलैहदा है। तो कहते हैं पहली बात मिल बैठो मगर किस ज़मीन पर मिल बैठोगे। आगे जवाब देते हैं:-

हर नामे की होवो जोड़ी
गुरमुख बैहसो सफा बिछाई॥

मिल बैठने के लिए, भई तुम भी पूजा करो, मैं भी पूजा करता हूं। तुम नमाज़ पढ़ो, मैं भी पूजा करता हूं। क्या मतलब? अपनी सुरत को, लोगो, उस के (प्रभु के) साथ जोड़ो। सब समाजों का मतलब तो यही है न कि प्रभु की फौज में दाखिल हो। हमारी सुरत इस की तरफ जाये। सब उसी तरफ लौ लगाओ। वही सब का पैदा करने वाला है। उसी ने इंसान सब एक से बनाये हैं। उसी की अंश आत्मा है। वही सब का जीवनाधार है। कहते हैं सब भाई उसी की तरफ़ लिव लगा लो। जब आप पूजा करते हो, प्रार्थना करते हो, ख्याल ऊपर चला जाता है। लिव लगाओ और इतनी लिव लग जाये कि हिलना जुलना भूल जाये। जिस्म जिस्मानियत का जब तक ख्याल रहता है तब तक द्वैत भाव है। कहते हैं यह कैसे हो? कहते हैं प्रभु का नाम ही एक ग्राऊंड है जिस पर सब इकट्ठे बैठ सकते हैं। **हर नामे की होवो जोड़ी**। आखिर हम प्रभु के पुजारी हैं भई। हरि नाम किस को कहते हैं:-

हर हर उत्तम नाम है जिस सिरजेया सब कोए॥

हरि का नाम बड़ा उत्तम है जिस ने सारे जहान को सिरजा (पैदा किया) है। अब यह कैसे हो। गुरमुख बैहसो सफा बिछाए, किसी गुरमुख की सोहबत में जिस का मुंह

उधर है जिस ने understanding को पा लिया, जिस ने उस का अनुभव किया, जिस का मुख प्रभु की तरफ है, उस का नाम है गुरमुख। गुरमुख बैहसो सफा बछाए, गुरमुख की सफहों में बैठो, प्रभु के नाम पर तो हम सब एक हैं कि नहीं? रस्मों रिवाजों के लिहाज़ से नहीं। देखो न, हमारे रस्मो रिवाज और हैं, पूजा के तरीके और हैं, आखिर मतलब तो वही है। अरब में जाओ। पानी कम है, वे कहते हैं खाली वजू कर लो, जिस को हम पंज स्नाना कहते हैं, नमाज़ पढ़ लो। जहां पानी बिल्कुल नहीं है, कहते हैं तयमम ही कर लो, मिट्टी से हाथ धो लो। मतलब यह है कि चेतन्य हो के बैठो। यहां पानी बहुत है, कहते हैं कि नहाये बगैर पूजा नहीं होती। मतलब यह था कि जब भी प्रभु की याद में बैठो, बाहोश हो कर बैठो, ईसाइयों के गिरजों में सिर नंगा बैठना अदब की निशानी है और सिख भाइयों के गुरद्वारों में सिर ढांप कर बैठना अदब की निशानी है।

अरे रस्म है अदब के लिए। उन की वह है, इन की यह है। अर्ज़ यह है कि जब प्रभु की याद में बैठो चेतन्य हो कर बैठो, बाअदब हो कर बैठो। तो यह climatic influence (जलवायु) के सबब से या रस्मो रिवाज से बने पीछे, गर्ज़ वही है। गर्ज़ को देखो। वह यही है कि प्रभु की तरफ मुंह हो, सब का मुंह उधर होगा। इतनी यकसूई (एकाग्रता) हो जाये सब देह ध्यास (अहसास जिस्म) भूल जाये। मगर यह कब हो सकता है? जब प्रभु के सामने रखा जाये। किन की सोहबत में? जो गुरमुख बने। यह सब दुविधा को दूर करने का वाहिद इलाज है। गुरु नानक साहब आये, उन्होंने यही कहा। पूछा, तुम कौन? कहने लगे, न हम हिंदू न मुसलमान, अल्लाह राम के पिंड प्राण। फिर पूछा आखिर तुम कौन हो। कहो तो सही। कहा, हिन्दू कहां ते मारिए मुसलमान भी नाहिं, कि चिन्ह चक्र हिन्दू के हैं, तुम तंगदिल और तंगनज़र हो, तुम मुझे तअस्सुब से मोरोगे। मुसलमान भी आप सिर्फ चिन्ह चक्रों को मान रहे हो। मुंह इधर नहीं, मुंह उधर (प्रभु की तरफ) होना चाहिए। मुंह तो हमारा दुनिया की तरफ है ऊपर चिन्ह चक्र बनाये हैं। चिन्ह चक्कर बनाने से वह (परमात्मा) भूलता नहीं

(धोखा नहीं खाता)। दुनिया को धोखा हम दे सकते हैं, प्रभु को धोखा नहीं दे सकते, वह घट घट में बैठा है। ऐसा मुसलमान भी मैं नहीं हूं। कहते हैं, तुम कौन हो? कहते हैं:-

पांच तत्त का पुतला, नानक मेरा नाओं॥

नानक भी ऐसा नाम है जो बड़ा मीठा है। न हिंदू है, न मुसलमान है तो कहने लगे कुछ और गौर से बतलाओ, कहने लगे:-

पांच तत्त का पुतला गैबी खेले माहिं॥

यही गुरु अर्जुन साहिब ने सब महापुरुषों की वाणी इकट्ठी कर दी, एक Banquet hall of spirituality रखा। कहते हैं सब मिल बैठ कर बैठो भाई, सारी दुविधाएं दूर हो जायेंगी। बैठेंगे, एक दूसरे का प्यार बनेगा। सहीनज़री से heart to heart talk (दिल की बात) से समझेंगे बात क्या है। भाई साईंस तो एक ही है न। देखने का मत एक है। प्रभु प्राप्ति हमारा आदर्श है, प्रभु सब में हैं। इस right understanding (सहीनज़री) से सब के लिए भाव बनेगा। दुश्मन कौन है? तो यह है spritiual background (रूहानियत की बुनियाद) जिस पर हम सब को मिल बैठना है। हम भूलते रहे, महापुरुष आ कर ताज़ा करते रहे, हमारे हजुर (श्री हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज) आये। उन्होंने कहा, ऐसी कामन ग्राऊंड रखो जिस पर सब समाजों के भाई इकट्ठे मिल बैठें। आगे दो चार समाजें थीं, अब एक ही समाज की कई समाजें बन चुकी हैं, तो आज ज्यादा ज़रूरत है इस बात की कि मिल बैठे। हिंदू मंदिरों में हिन्दू जाते हैं, सिख गुरुद्वारों में सिर्फ सिख जाते हैं। मुसलमानों की मस्जिदों में सिर्फ मुसलमान जाते हैं। ईसाइयों के गिरजों में सिर्फ ईसाई जाते हैं। मिल बैठने का मौका कहां? इतनी तंग दिली है। अब तो मालिक की दया से यह है अब एक दूसरे के यहां आने जाने लगे हैं नहीं तो एक दूसरे समाज की शक्ल नहीं देखना चाहते थे। तो आज इंसान की दुविधा का वाहिद ईलाज यही है, मैंने अभी

अर्ज़ किया था।

तो दुनिया में मनुष्य जीवन पाना बड़ी भारी बरकत है, उस (प्रभु) की खास दया है। इस में ही हम हकीकत को पा सकते हैं। तो कहते हैं भाइयो मिल बैठो, बैठने पर क्या करो, उधर (परमात्मा की तरफ) लिव लगा लो। जब ऊपर ख्याल आयेगा न, ऊपर आसमान एक ही है। जब दीवारों के अंदर घिर जाओ, आसमान नज़र नहीं आता, छत्तें भी साथ पड़ी हों तो फिर आसमान कहां? तो रहो किसी समाज में, किसी समाज में रहना बरकत है। ज़रूर रहो, नहीं तो corruption (बदख्याली) फैल जायेगी मगर किसी समाज में रह कर जब तक किसी गुरमुख या जागते पुरुष जिस ने अनुभव किया है, की सोहबत न करो, सही सोच सही नज़री नहीं मिलती।

जिन्हां दसंदड़ेयां साडी दूर मत वंजे मित्र असाडरे सेही॥

जिन के मिलने से हमारी दुर्मति का नाश हो, वही हमारे सच्चे मायनों में मित्र हैं। बाकी? ऐसे मित्र कितने मिलते हैं? कहते हैं सारे जहान को ढूंढ़ा, ऐसा मित्र विरले कहीं कहीं मिला। समाजों में रह कर जितने महापुरुषों का ज़िक्र है, किसी समाज में थे, They are born in some sect, मगर इतने ऊंचे चढ़ गये कि सब मानव जाति एक है आत्मा के लिहाज़ से, यह नज़रिया बन गया।

महापुरख साखी बोलदे सांझी सगल जहाने॥

तो सब दुविधाओं का इलाज हो जाये अगर हम सब एकत्र हों बाहर से कोई मुश्किल आ जाये। हम रोटी बांट कर खा लेंगे।

कनक (गेहूं) बाहर से नहीं आती तो क्या हुआ। उसी से गुज़ारा कर लो। पिछली दफा कोई कनक (गेहूं) में कमी हो गई थी। राशन शुरु हुआ था। गवरनमैंट ने अपील की कि लोग एक एक दिन का राशन छोड़ दें। तो मेरे साथ भी ज़िक्र हुआ। मैंने सत्संग में कहा, हमारे जो भाई थे, कि भई एक दिन का खाना छोड़ दो। कई हज़ार

कार्ड भर गये एक दिन में। तो यह जो मिल बैठने की है न, एक दूसरे के दुख सुख बांटने की बात हमारे दुख सुख बने। कोई मुसीबत आ जाये तो भी "मर्गे अंबूह जशने दारद", दुख दुख नहीं रहते। हालात बिगड़ते रहते हैं न समझी के कारण। इस के दूर करने का वही ईलाज है जो हमेशा से चला आया, मिल बैठ कर बैठो। अपनी लिव उस तरफ (प्रभु की तरफ) लगा लो। उसी के नाम पर ही हम इकट्ठे बैठ सकते हैं और किसी जागते पुरुष की सोहबत में जिस ने awakening (जागृति) को पाया है, सब दुविधा, हर एक किसम की, ख्वाह वह सोशल (सामाजिक) तकलीफ है, पोलिटीकल है या relegious (धार्मिक) है। सब दुविधओं का वाहिद ईलाजः-

सरब दुखन को औखध नाम॥

सारे दुखों का वाहिद ईलाज वही है spiritual backgorund जब बनती है, आत्मिक खुराक मिलती है। इस से अगर रंग ले लें तो बाकी सब चीजें खूबसूरत बन जाती हैं, इस के बगैर सब दुखदाई बन जाता है।

दुनिया में दो किस्म के गुरमुख आते हैं, महापुरुष आते हैं। एक अवतार आते हैं, एक संत आते हैं, काम उसी (प्रभु) का है। उन का अपना काम, उन का अपना काम। उनका आपस में, परस्पर मेल होता है। अवतार हमेशा संतों की कद्र करते हैं। संत हमेशा अवतारों को अपनी इज्ज़त देते रहे। कमीशन है अपना। अब कमांडर-इन-चीफ का अपना काम है। अगर वह न हो तो हम क्या कर सकते हैं, गड़बड़ हो जाये तो बताईये। जरूरत है कि नहीं? वे उनकी रक्षा करते हैं, वे उन की करते हैं। तो संतों का काम unite करना (मिलाना) है, cement करना है आत्मिक लेवल से, जब धर्म की ग्लानि हो तो स्थिति कायम करने के लिए अधर्मियों को दंड देने के लिए, धर्मियों को उभारने के लिए। संतों का काम क्या हैः-

तुरत मिलावें राम से उन्हें मिले जो कोय।

प्रभु से जोड़ना, उन्हीं में से जब दशम गुरु साहिब आये, आप को पता है, जब

सारे इकट्ठे हुए, कहने लगे अब शीश चाहिए, खड़े हो जाओ, कितने आदमी हैं जो शीश देने को तैयार हैं? Spritual backgrournd थी, निकल आये (सिर देने के लिए), उन्होंने यहां तक दावा किया था कि एक एक से लाख लड़ाऊं तो गोबिंद सिंह नाम रखाऊं बात समझे? तो spritual backgorund बने। इस से पुष्टि मिलती है। हर एक (जीवन) में अगर वह न हो तो temporary (आरज़ी) थोड़ा बहुत उभार आता है थोड़ा, खत्म हो जाता है। अगर महात्मा गांधी को कुछ success (कामयाबी) हुई उस की basis (बुनियाद) spiritual (रूहानी) थी। तो सारे महापुरुषों ने इस पर ज़ोर दिया है, दोनों साईडें हैं। तो मिल बैठना, आपस में मिल बैठो, एक दूसरे का दुख सुख बांटो, कोई क्लेश आ जाये तो इकट्ठे सहार लो। हम क्या करते हैं? हम अपने लिए भला सोचते हैं दूसरे के लिए नहीं। नतीजा क्या है? दुख कशमकश, घर-घर में यही हाल है, समाजों समाजों में यही हाल है, मुल्कों मुल्कों में यही है। तो right understanding (सहीनज़री) की ज़रूरत है। मिल बैठने की, समझने की ज़रूरत है।

इन बिध पासा डालो बीर ॥
इन बिध पासा डालो बीर॥

भई यह तरीका ज़िंदगी का अख्तियार कर ऐ बहादुर। पहले भाई कहा, अब बहादुर कहा। कहते हैं यह तरीका है। यह बुद्धि अख्तियार करो, सब दुविधायें दूर हो जायेंगी। कि ऐ बहादुर पुरुष, तुम यह अख्तियार कर लो।

गुरमुख नाम जपो दिन रात॥
अंत काल ना लागो तीर॥

कहते हैं क्या बुद्धि अख्तियार करो? प्रभु की याद। हम सब पुजारी हैं उस के, वह सब की जान की जान है, हम सब उसी की अंश हैं। हम सब भाई-भाई हैं। इस में सब दुख दुनियावी दूर हो जायेंगे और अंत समय के भय दूर हो जाएंगे। अगर

अपना ध्यान, देखिये थोड़ा। Practically थोड़ा ध्यान आप prayer (प्रार्थना) करते हुए ख्याल अपना थोड़ी देर तक फेरो, जिस्म भूल जायेगा। रूह पिंड को छोड़ जायेगी, जिस्म बेहिस हो जायेगा, मौत का खौफ नहीं रहेगा। एक को लिव लगने से attraction (कशिश) बनेगी।

सुरतवंत जो आदमी है जिस ने सुरत को कंट्रोल कर लिया है, यकसू कर के उस तरफ मुंह कर के, उस में बड़ी भारी ताकत है। महान सुरत परमात्मा में ताकत यह थी कि एक बार कहने से सारी दुनिया हस्ती में आ गई और हमारी आत्मा उसी की अंश है। तो बड़ी भारी ताकत है। सिर्फ फैलाव के कारण यह निर्बल और कमज़ोर हो रही है। अगर इस का मुंह उधर हो यकसूई हो गई कि नहीं। बाहर का भी ख्याल हटे जिस्म का ख्याल हट कर यकसू लिव लगे:-

लिवे बाझों जिंद निमाणी देह निमाणी
लिवे बाझों क्या करे विचारी॥

इस लिव के बगैर सारा जहान दुखी है। तो कहते हैं दुनियावी दुख ही नहीं बल्कि मौत के समय जिस्म को छोड़ने का दुख है वह भी नहीं रहेगा। मौत के वक्त क्या होता है। रूह सिमट कर नीचे चक्रों से आंखों के पीछे आती है न, rise above जीते जी रोज़ करो, जिस्म से ऊपर आओ, मौत का खौफ ही नहीं रहेगा। यह कब होगा, जब हमारी लिव उस तरफ लगेगी जब सब के अंतर झलक हम उस (प्रभु) की देखेंगे तो दुख किस को देंगे, किस का हक मारेंगे, किस का खून निचोड़ेंगे, कहते हैं यह मुसल्लमा अमर है (पक्की बात है)। आगे 'एक रहाओ' दे दिया है, गुरु ग्रंथ साहिब में 'एक रहाओ' का निशान इस अमर को वाजेह करने के लिए दिया गया है, बाज़ तुकों के आगे कि यह मुसल्लमा अमर है। तयशुदा हकीकत है इसे हृदय में धारण कर लो। महापुरुषों की वाणी में brevity (सार) होती है, उस में चीज़ को बड़े थोड़े लफ्ज़ों में पेश कर दिया जाता है। तो कहते हैं, यह विधि है ऐ बहादुर, तुम इस को

अख्तियार करो।

कर्म धर्म तुम चौपड़ साजो
सत करो तुम सारी॥

कहते हैं यह सारा संसार ही चौपड़बाज़ी है। खेल होता है न चौपड़ का, चार होते हैं उस के खाने। अब चार ही पैदाईश के इसके (जीव के) ज़रिये हैं (सेतज, उतपुज, अंडज, जेरज), यह संसार चौपड़बाज़ी है। तो सत्य जो है न वह परमात्मा है उस की तरफ लिव लगाओ। हम सब नर्दें (चौपड़ की नर्द होती है जो) हैं। सब ने घर को जाना है जैसे चौपड़ की नर्दें चक्कर काट के अपने घर जाती है। जो घर के नज़दीक आ जाये, यानी एक के साथ दूसरी नर्दें मदद कर जाएं तो उस की नर्द को मार नहीं सकता कोई, घर के नज़दीक आ जाती है जो मगर अगर वह जो चौपड़ पर जाये। जो खेल है तो वह घर में दाखिल हो जाती है। न पड़े तो चक्कर काटती है। क्या? अगर हमारे पीछे कोई guiding principle गुरमुख हो, कोई हो, उस के साथ हम दुनिया में मारे नहीं जायेंगे। चौपड़ खेल जारी है। उस में काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार हम को मारते रहते हैं, गिराते रहते हैं। कहते हैं एक साथ हो जाए न कोई तो तुम घर के नज़दीक जा सकते हो और उस वक्त अगर तुम, कोई भाग्य से, प्रभु कृपा कर दे तो घर में दाखिल हो गये तो हो गये, नहीं तो चक्कर काटो। तो यह चौपड़बाज़ी है दुनिया। हम सब नर्दें हैं, घर में पहुंचना है, वही नर्दें बचेंगी जो घर में पहुंच जायेगी। अकेली रहेगी तो मारी जायेगी। एक तरीका समझाने का है कि आप गुरमुख बैठो सफा बछाई। Awakened पुरुष (जागते पुरुष) की सोहबत अख्तियार करो, नहीं तो मारे जाओगे, घर में पहुंचने के काबिल नहीं रहोगे। जब लिव लगने से जिस्म जिसमानियत से ऊपर आओगे तो अपने घर में दाखिल हो जाओगे।

Kingdom of God cannot be had by observation. It is within you, बाहरमुखी फैलाव में तुम प्रभु की बादशाहत में दाखिल नहीं हो सकते।

कर्म धर्म तुम चौपड़ साजो
सत करो तुम सारी॥

यानी चौपड़ के चार खाने होते हैं, चार तरीके से पैदाईश है। कहते हैं कर्म धर्म को चौपड़ बना लो और नर्दें तुम हो। आगे क्या करोगे ?

काम क्रोध लोभ मोह जीतो
ऐसी खेल हरी प्यारी।

काम क्रोध, लोभ, मोह। अहंकार का ज़िक्र अभी नहीं किया। चार चीजों को जीतो। काम क्या है ?

जेति मन की कल्पना काम कहावै सोय॥

ब्रह्मचर्य की रक्षा पहला काम है। बाकी कामनाओं का फैलाव कम करो, कामना विहीन हो जाओ, be desireless, महात्मा बुद्ध ने कहा। एक desire (इच्छा) हो, क्रोध हो क्या होता है ? किसी desire (इच्छा) में ज़ाहिर, दरपर्दा कोई रुकावट बन गई तो क्रोध की शक्ल अख्तियार करता है। वहीं ऊपर ईर्षा, द्वेष, चुगली, निंदा बन जाती है। असल में इस की basic चीज़ (बुनियाद), क्या है ? कामना है। अब उपाय बने तो कैसे बने ? लेना है। उस का नाम है लोभ। जब मिल जाये तो छोड़ना नहीं चाहता, उस का नाम है मोह। एक नाली हो जिस में पानी बड़े जोर से जा रहा हो, उस में एक पत्थर रख दो। पानी में रुकावट हुई न, बहाव में ? उससे फिर दो चीज़ें बनती हैं, एक झाग, एक आवाज़। जिस को क्रोध आता है वह आहिस्ता नहीं बोल सकता है, उस के मुंह में झाग आ जाती है। फिर वह कहता है ज़रूर लेना है, उस का नाम मोह है। लोभ है और ले कर नहीं जुदा होना यानी इन को जीतना है, चार चीज़ों को। उस के जीतने का वाहिद ईलाज है, कामना विहीन हो जाओ। दुनियावी कामनाओं से एक बड़ी कामना higher सामने रख लो, बाकी सब उस में आ जाये। फिर घर के नजदीक आ जाओगे। घर में आ कर अगर हम हंगता (अहंकार), हंगता देहध्यास की

है, देहध्यास से ऊपर आ गये, घर में दाखिल हो गये पर यह चार चीज़ें हमें उस तरफ आने नहीं देतीं, घर के नज़दीक, हमेशा फैलाव में रखती हैं, कभी क्रोध, कभी काम, कभी लोभ, कभी मोह।

तो एक बड़ा broad view दिया है कि सारा जहान चौपड़ बाज़ी है। चार तरह से पैदाईश है और जितने कर्म धर्म हैं ये सब, इस में नर्दें (हम) खेल रहे हैं। उस के साथ एक और साथ लगे (साथी) तो घर के नज़दीक चले जाओ। घर के नज़दीक जाने के लिए काम, क्रोध, लोभ, मोह को जीतो। अगर कोई देहध्यास से ऊपर चढ़ जाए, लिव लगने से तो अपने घर में दाखिल हो जाए। किन को उपदेश है यह?

महापुरख साखी बोलदे सांझी सकल जहाने॥

As a man problem है यह, तो इस लिए:-

सत्गुर ऐसा जाणिये जो सब से लए मिलाये जीओ॥

To bring all children of God together, यह काम वह करता है, फिर कहते हैं क्या होता है इस के बाद?

उठ इश्नान करो प्रभाते
सोई हर आराधे॥

इस के लिये भई हर रोज़ जागो।

प्रभाते उठ नाम जप निस बासर आराध॥
काला तुधे न विआपई नानक मिटे उपाध॥

सुबह का जागना।

अमृत वेला सच नाओं वडियाई विचार॥

अमृत वेला जो small hour of the morning यह बड़ा भारी यकसूई

(एकाग्रता)का वक्त है। कहते हैं, सुबह उठो, उद्यम करो प्रभाति। आलस नींद को छोड़ दो, उस की याद कर लेटे भी। अब लेटे हैं तो उस की याद में लेट जाओ, उसी में सो जाओ, उसी ख्याल में, खून में दौरा वही चलता रहे। जब सुबह उठो तो चेतन्य हो कर, नहा कर बैठ जाओ किस तरह, चेतन्य हो कर बैठो। इस तरह सोते भी तुम्हारा भजन बनता जायेगा, जागते भी बनता जायेगा। कहते हैं:-

जागत रहे ना सोवत दीसै॥

वे जागते ही रहते हैं, वे कभी सोते ही नहीं। हमारे हजूर थे, बारह एक बज जाते, फिर तीन बजे जागना, हां भई। तो यह अभ्यास से बन जाता है। जिस्म को आराम चाहिए न, आत्मा तो जाग रही है। उस को तो खुराक जागते मिलती है। जब महाचेतन प्रभु से यह लगे, शरीर से ख्याल हटाओ। ऊपर जुड़े, शरीर को तो आराम मिल गया जितना मिलना था। नींद का हिसाब है शायद एक दो मिनट होती है, ज्यादा होती नहीं। आगे जितना बढ़ा लो जिन्होंने इस तरफ काम किया, उनके लिए तो बड़ी ordinary (मामूली) बात है मगर जिन्होंने नहीं किया वे कहते हैं शायद यह बड़ी भारी करामात है (हर वक्त जागते रहना)। जब रात सोने का समय आये तो उस की याद में, प्रभु की गोद में चले जाओ। हमारी रातें, याद रखो, बिगड़ गईं। जिन की रातें बिगड़ गई उन का सब कुछ बिगड़ गया। जिन की रातें संवर गई उन का सब कुछ संवर गया। रात को सब तरफ से फारिग हो कर उस की याद में बैठा करो। अभी ख्याल में रहो फिर (सुबह) चेतन्य हो कर बैठो। उस से आत्मिक खुराक मिलती है, उस से हर एक चीज़ मिलती है।

बिखड़े दाव लंघावे मेरा सत्गुर
सुख सहज सेती घर जाते॥

बाहर से जिस्म जिस्मानियत से ऊपर आ कर, और कई मुश्किलें हैं negative power (काल पावर) की, वहां पर। जो सत्पुरुष हस्ती है, वह यहां भी काम करता

है और वहां भी काम करता है। बाहर लेक्चर कथा देकर जो किनारे हो जाता है वह क्या मदद कर सकता है? इस लिये कहा:-

नानक कच्चड़ेयां संग तोड़ ढूंढ़ सज्जण संत पक्केयां॥
एह जीवंदे विछड़े ओह मोयां ना जाही संग छोड़॥

और

सच्चा सत्गुर सेव सच संमालेया॥
अंत खलोया आये जे सत्गुर अग्गे घालेया॥

सारे महापुरुषों ने यही कहा है:-

दामने ओ गिराये यार दिलेर,

ऐ बहादुर पुरुष किसी ऐसे के दामन को पकड़ -

को मुत्तरह बाशद अज़ बाला ओ ज़ेर।

जो हिसों से और जिस्म से ऊपर जाने की अवस्था से भी वाकिफ है, यहां भी मदद करे और वहां भी। आगे इस से negative power (काल पावर) के धोखे हैं। Positive power है न प्रभु की, वह तुम्हारी मदद करेगी। यह है आम routine (सिलसिला) बाहर का ब्यान कर के साथ ही साथ मनुष्य जीवन से पूरा फायदा उठा कर अपने घर पहुंच जाओगे। घर का रिश्ता कहां से शुरू होता है? When you are reborn, द्विज बनते हो। पहला इस जिस्म में पैदाईश, एक पिंड (जिस्म) से परे की पैदाईश। यह बात थी। यह चोला बदलना है।

Learn to die so that you may begin to live. Except ye be born anew ye cannot enter the kingdom of God.

जब तक दोबारा जन्म नहीं होता तुम प्रभु की बादशाहत में दाखिल नहीं हो सकते, तो कहते हैं सुबह उठ कर उस की याद में बैठ जाओ। लिव लगाओ, लिव ऐसी लगाओ कि जिस्म जिस्मानियत सब किनारे रह जाये। और मतलब क्या है? अभ्यास का क्या मतलब है? किसी चीज़ को बार बार करने का नाम अभ्यास है। किस तरह? इस तरफ लिव लगाओ। अरे भई किसी समाज में, किसी मुल्क में रहो। बात वही है। गुरुमुखों की सोहबत में बैठो, radiatoin से फायदा मिलता है।

हर आपे खेले आपे देखे
हर आपे रचन रचाया॥

कहते हैं यह सारी चौपड़ बाजी, उसी (प्रभु) का खेल है, उसी ने बनाया है, उसी की आत्मा है। जिस्म प्रेरक बनता है। जो उधर मुंह करते हैं उधर लग जाते हैं, इधर करते हैं , इधर लग जाते हैं। बात यह है मन का रुख आत्मा की तरफ हो गया, यह रूहानी बन गया। अगर जिस्म बाहर इंद्रियों की तरफ फैलाव में गया तो दुनियादार बन गया, बार बार आने का सामान बन गया इस का मौजूदा, चलाने वाली शक्ति सब की वह (प्रभु)है, जैसे मशीनरी हो न, जो पावर हाऊस पर बैठा है वह कहता है:-

बिना हुक्म नहीं झूले पाता॥

जो नीचे बैठते हैं पावर हाऊस के वे कहते हैं देख भई उंगली न डालो, डालोगे तो कट जायेगी। हम जिस लेवल पर बैठे हैं, हम समझते हैं अपने अपने कर्म को। अगर उस लेवल पर आ जायें देखेंगे वह कर रहा है, फिर उस में मैं-पना नहीं रहता, conscious co-worker of Divine Plan का बन जाता है। देखता है कि हर्ता, कर्ता, धर्ता वही है। हर एक दायरे के अपने अपने कानून है। उस के मुताबिक काम करता है :-

जन नानक गुरमुख जो नर खेले
सो जित्त बाजी घर आया॥

कि जो गुरमुखों की सोहबत में बैठ कर यह खेल खेलता है वह मनुष्य जीवन की बाज़ी जीत जाता है, अपने घर पहुंच जाता है। जो गुरमुखों से नहीं मिलता, मनमुखों से मिलता है, वह चक्कर काटता रहता है। पहले शुरु यहीं से किया:-

होये एकत्र मिलो मेरे भाई ॥
दुविधा दूर करो लिव लाई॥

आगे फिर कहा :-

हर नावें की होवो जोड़ी
गुरमुख बहसो सफा बछाई॥

Awakened पुरुष कहो, जैसी सोहबत वैसा रंग। आलम तुम को आलम बना सकता है, इल्म दे सकता है, अनुभवी पुरुष अनुभव दे सकता है। तो किसी समाज में रहना एक बरकत है, ज़रूर रहो। To be born in a temple is good. मनुष्य जन्म और समाज से पूरा फायदा नहीं उठाता मगर समाज में रह कर जब तक rise above कर के इस एकता में नहीं आता, जो भी किसी समाज में है। आखिर महापुरुष जितने आये हैं, किसी समाज में आये हैं, इतने ऊंचे चढ़ गए--

एक नूर तो सब जब उपजेया कौन भले को मंदे॥

उस अनुभव को पा जाते हैं। तो ऐसे पुरुष जिस मुल्क में हों वहां जागृति है। East (पूर्व) से हमेशा west (पश्चिम) को light (रोशनी) जाती रही। अब भी वह उम्मीद कर रहे हैं। आर्च बिशप आफ कंटबरी ने सवाल किया, Brother, we are waiting light from the East.

हम इंतज़ार कर रहे हैं लाईट मशरिक (पूर्व) से आएगी। हम ईस्ट वाले तो उसकी बिनाअ (आधार) हैं। तो हिंदुस्तान हमेशा उसका (रूहानियत का) गवाह रहा है। कुदरत का खेल है ऐसा ही। यहां का रहने वाला अगर मुंह इधर कर ले तो सुख हो। इसी से तालीम उन को मिल रही है। यह मिल बैठने का World fellowship of Religions को बड़ी भारी कद्र से वह देखते हैं, वैस्ट वाले। तो हर एक आवाज़ यहीं से उठती है, हम खुशकिस्मत हैं जो इस मुल्क में हैं। यही है तालीम जो हमेशा महापुरुष देते रहे हैं। एकता आगे ही मौजूद है। हम भूलते रहे महापुरुष आ कर फिर ताज़ा करते रहे। यह गुरु अर्जुन साहिब का छोटा सा शब्द था। बड़ी साफ तालीम है।

तो आज मुल्क के हालात हैं आप को पता है, मिल बैठने की ज़रूरत है। मिल बैठेंगे, दुख सुख बाटेंगे। मिसाल है

मर्गे अंबोहरा जशनेदारदा।

अगर ऐसे हालात भी हों तो एक दूसरे को मिलने में, मौत भी एक जैसी बन जाती है तो मिल बैठना सीखो। एक दूसरे के दुख दर्द काटने, बांटने सीखो, एक दूसरे को सुख पहुंचाने का यत्न करो, तुम भी सुखी हो जाओगे। जब हम अपने आप को सुख पहुंचाते हैं, दूसरे को नहीं पहुंचाना चाहते और हर एक अपने आप को पहुंचाना चाहता है, कशमकश है, दुख है। Love knows service and sacrifice. अगर प्रभु से प्यार करना है तो वह सब में है, सब से प्यार करो और प्यार में सेवा और कुर्बानी देनी पड़ती हैं लेनी नहीं पड़ती। अगर हम सब ही प्यार के वश से हो कर दूसरे के लिए अपनी जान, हर एक चीज़ कुर्बान करना चाहें तो दुखी कौन होगा भई? मैं आप के लिए आप मेरे लिए। असल में महापुरुषों की तालीम यही है। इसी लिए कहा, Love and all things shall be added unto you. एक प्रेम करना सीखो। किस से? सब से नहीं परमात्मा से Overself से सुख हो जाए, सारी बरकत अपने आप आ जाए। तो यह शब्द आ गया था, अपने आप। ज़रूरत मुल्क की इस वक्त

यही है कि सब मिल बैठो और एक दूसरे के दुख दर्द बांटो। अगर बाहर से कोई भीड़ आती है तो मिल बैठोगे। गवरनमैंट अपने लेवल पर काम कर रही है मुबारिक है, हम अपनी जगह करें। दोनों की ज़रूरत है। अवतारों की और संतों की भी। Cementing power यह (जोड़ने वाली ताकत) जो है, यह परमार्थ है। इस बात की बड़ी भारी ज़रूरत है। महापुरुष हमेशा इस की ज़रूरत को पेश करते रहे। अभी लामा जी की बात आप ने सुनी। वही गुरु साहबों ने कही। वही हमारे हजूर ने कहा कि आज ज़रूरत यही है कि एक कामन ग्राऊंड पर सब मिल बैठो। रहो अपनी अपनी समाज में। समाजें सब अच्छी हैं, हर एक समाज में महापुरुष आते हैं। उन्होंने यही बातें कही हैं। सिर्फ जिन्होंने इस बात का अनुभव किया, awakened पुरुष हैं, जागृत पुरुष हैं, उन की सोहबत में बैठो। तंगदिली और तंग नज़री और जो आगे नहीं अभी तक, उन की सोहबत में बिगड़ जाओगे।

इस के बाद मास्टर प्रताप सिंह जी पाठी ने यह ग़ज़ल गा कर सुनाई:

वह पर्दापोश होकर जलवे दिखा रहे हैं,
ईमान लाने वाले ईमान ला रहे हैं।
सब के दिलों में घर है सब की नज़र में जल्वा,
सब से मिले रहेंगे सब से जुदा रहे हैं।
अपने से बेखबर हैं जो उस से बाखबर हैं,
जो खुद को खो रहे हैं, वह उस को पा रहे हैं।

हजूर ने इस मौके पर मुदाखलत करते हुए फरमाया, एक मामूली सी बात याद आ गई, पंडित जी (पंडित जवाहर लाल नेहरू) की, यह थी, कि जब मैं मर जाऊं तो मेरी अर्थी की राख सारे हिंदुस्तान के दरियाओं, पहाड़ों और सब में फैला दो। जिस में यह जज़्बा है, कितना भारी जज़्बा है, वह अपने लिए नहीं जीते, लोगों के लिए जीते हैं। मर कर भी किसी के काम आते हैं।

गुमनाम हो गए सब नामो निशान वाले,
गुमनाम जो हुए थे वह नाम पा रहे हैं।

हजूर महाराज जी ने कहा, ऐसे पुरुष हमेशा गुमनाम काम करते हैं। दूसरे को मान-बड़ाई देते हैं, सब को जीवन देते हैं। वे जो दूसरों के लिए जिए, दूसरे के लिए रहे, वे अपना नाम बताते नहीं मगर सारी उम्र उन का नाम कायम रहता है।

वह नेस्त जो अपनी हस्ती के हैं फिदाई,
वह हस्ती में जो अपनी हस्ती मिटा रहे हैं।

हजूर महाराज जी ने फरमाया, दशम गुरु साहिब ने कहा :-

खालसा मेरी जान की जान।
खालसा मेरो प्राण के प्राण।
खालसा मैं हौं करूं निवास।
खालसा मेरो रूप है खास।
खालसा मेरो सतगुर सूरा।

वह दूसरों के लिए हैं। जो बन जाए उन पर कुर्बान हैं।

दुनिया लूटा चुके हैं उक्बे लुटाएंगे हम
तुम पर फिदा रहेंगे तुम पर फिदा रहे हैं

हजूर महाराज जी ने कहा, कई इसी दुनिया में उक्बे के लिए क्या, परलोक के लिए कोशिश करते हैं कि वह हमें मिले। कहते हैं परलोक की भई हमें ख्वाहिश नहीं हम दुनिया पर कुर्बान रहे हैं, अब भी हैं आगे भी रहेंगे। बड़ा भारी ऊंचा स्थान है।

कामिल निशाने हस्ती अपनी मिटा रहे हैं,
आशिक मिटे हुओं पर कुर्बान जा रहे हैं।

जो जी में आए गोबिन्द कर लो खुशी से बेशक,
हम तो रज़ा पर राज़ी गर्दन झुका रहे हैं।

ख्वाहिश का जाम गाफिल हरगिज़ नहीं भरेगा,
कब तक तू इस की खातिर पच पच के नित मरेगा।
यह जिस्मो मालो जां सब तुझ से अलैहदा होंगे,
रोना पड़ेगा तुझ को गर इन का दम भरेगा।
गर मन फंसा रहेगा झगड़ों में इस जहां के,
और आकबत की खातिर तोशा न कुछ भरेगा।
चक्कर में तू रहेगा यह बार बार सुन ले,
मर मर तू जिएगा और जी जी के फिर मरेगा।
गर जोड़ना है दिल को, बस जोड़ उस प्रभु से,
दुनिया से गर है जोड़ा फिर तुझ को वह घड़ेगा।
हाथों को तू मलेगा जब जाएगा जहां से,
दुनिया के घर में गर तू कुछ जोड़ कर धरेगा।
रहना सदा शहन्शाह दुनिया में इक किनारे,
फंस जायेगा जो इस में दिन दुख के वो भरेगा।

हजूर महाराज जी ने आखिर में यह वचन फरमाए, मनुष्य जीवन बड़े भाग्य से

मिलता है। अपने लिए भी जीओ और दूसरों के लिए भी। अपने लिए जीना यह है कि हमारे अंतर प्रभु बस जाए।

सो जीवेया जिस मन वस्सेया सोए॥

नानक अवर न जीवेया कोए॥

और दूसरों के लिए जीना यह है कि उसी (प्रभु) को सामने देखो और दूसरों के काम आओ, अपने काम तो हर आदमी आता है। इन्सान का जीना वही सफल है जो दूसरे के काम आए मगर इस के लिए उम्मीद इस बात की न रखे, फल की, नहीं तो आना पड़ेगा। इस लिए उस के हवाले रहे, उसी में फना रहे, उस की याद में रहे। वह (प्रभु)सब है सब पर कुर्बान रहे, यह है आदर्श हमारे सामने, सब महापुरुषों ने रखा है। रहो अपनी अपनी समाजों में, किसी समाज में रहना बरकत है। ज़रूर रहो, रह कर यह आदर्श है, उस (प्रभु) को पाना है, जागते पुरुषों की सोहबत संगत में।

✧✦✧